डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, जून 2020
वर्षः 03, अंक–08

कोविड–19 की वजह से टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ी हैः प्रो0 सिनक्लेयर 03

विषम परिस्थितियों में सभी को आत्मनिर्भर बनना होगाः कुलपति 04

श्रीराम भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण तत्व हैंः कुलाधिपति

26 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में राम नाम अवलम्बन एकू विषय पर 26–28 मई, 2020 को तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय ई–सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में भगवान श्रीराम का महत्व सदियों से सदैव विद्यमान रहा है। प्रभु श्री राम भारतीय संस्कृति की चेतना के प्राण तत्व है। संपूर्ण भारतीय संस्कृति में राम नाम की महत्ता की चर्चा पाई जाती है। भगवान श्री राम साधन नहीं साध्य हैं। ऐसे समय में राम नाम का आधार ही मानवता का उद्धार कर सकता है। प्रभु श्री राम को धर्म, जाति, देश और काल में सीमित नहीं किया जा सकता। प्रभु श्री राम ने समूची वसुधा को सत्य के मार्ग का अनुसरण करना सिखाया है। जीवन के प्राण तत्व राम हैं। भारतीय लोक जीवन में राम का महत्व सदियों से रहा है। राम कण–कण में व्याप्त है। कुलाधिपति ने कहा कि इस महामारी ने करोड़ों लोगों का जीवन प्रभावित कर दिया है, ऐसी स्थिति में भगवान राम के जीवन आदर्शों से काफी कुछ सीखने का वक्त है। राम की स्वीकार्यता सदियों से रही है, वसुधैव कुटुंबकम की संकल्पना राम की परंपरा है। बाहर से आकर हाथ पांव धोकर ही घर में प्रवेश करने की संस्कृति यहां प्राचीन काल से रही है। भारत के प्रधानमंत्री के द्वारा देशव्यापी स्वच्छता अभियान पर ध्यान दिलाते हुए कुलाधिपति ने कहा की साफ–सफाई हमारी सनातन व्यवस्था का एक अंग रहा है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने राम के नाम की महत्ता का एक जीवंत उदाहरण अप्रवासी भारतीयों का देते हुए कहा कि जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था, तब भारतीयों को काला पानी की सजा स्वरुप अंग्रेज समुद्री द्वीपों पर छोड़ देते थे जहाँ न कोई जीवन था न कोई खाने का सुलभ साधन और समुद्री जीव का खतरा अलग से था। ऐसे समय में वे वहाँ स्थित पत्थरों पर श्री राम लिख कर उनकी पूजा से अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। आज उनमें राम की ऐसी महिमा हुई है कि हमारे अप्रवासी भारतीय द्वीपों को चला रहे हैं और वहाँ राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। ये प्रसंग बताता है कि जीवन के प्रत्येक समस्या के निवारण का रहस्य राम नाम में है। कुलपति ने राम के चरित्र में प्रत्येक धर्म जैसे पिता धर्म, पुत्र धर्म, पति धर्म, राज धर्म, इत्यादि का वर्णन करते हुए इसे मानव जीवन के लिए प्रेरक बताया। कुलपति ने कहा कि भारतीय संस्कृति में ऐसे उपायों की कोई कमी नहीं है। प्रभु श्री राम के जीवन आदर्श और मूल्यों से भारतीय जनमानस सदैव ही प्रेरित होता है। हमारे धर्म ग्रंथों और शास्त्रों ने विपदा काल में ईश्वरीय स्मरण से प्राप्त शक्तियों को जन–जन तक पहुंचाया। भारतीय संस्कृति को शक्ति ऋषियों, मनीषियों और धर्म शास्त्रों से मिली है। हजारों वर्ष तक सामाजिक रूप से व्याप्त परंपराएं मानवीय मूल्यों को पोषित करती आई है।

सेमिनार के मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के महामंत्री उमाशंकर पचौरी ने कहा कि राम नाम एक ऐसी औषधि है जिससे

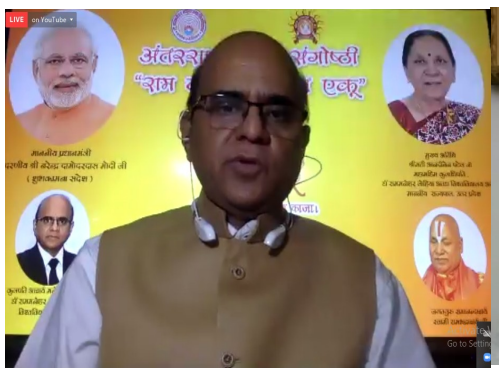

सभी बीमारियों से बचा जा सकता है। सारी बीमारी की जड़ मन है और मन को राम को समर्पित करने से बीमारी समूल नष्ट हो सकती है। राम मर्यादा के शिरोमणि हैं। दुनिया की सभी अच्छी वस्तुओं के मानक राम हैं। सहजता एवं सरलता ही राम है। राम के मतों का जागरण किए बिना स्वयं व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। श्री पचौरी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के जीवन में राम मूल मंत्र के रूप में थे। संयम जीवन का मूल आधार है। राम नाम की भक्ति के बिना जीवन अधूरा है। राम के जीवन प्रसंगों का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि राम के जीवन में गुरुओं का बहुत योगदान रहा है। राम के सारे कार्य गुरु कृपा से ही बने। जो ठीक मार्ग पर चलाए वही गुरु है।

विशिष्ट अतिथि जगतगुरू रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी ने कहा कि भारत आध्यात्म की भूमि है। राम नाम अवलंबन एकू रामचरितमानस के बालकांड से उद्धृत है। उन्होंने कहा कि अयोध्या दुनिया की पवित्रतम भूमि में से एक है जहां किसी का वध अकारण न हो वह अयोध्या है। राम नाम सदैव ही स्मरणीय रहा है। जब जब किसी के जीवन व राष्ट्र में कठिनाई आई है तब तब राम ने ही मार्ग दिखाया है। राम नाम दुनिया की सबसे बड़ी महा औषधि है और इस महामारी से लड़ने में प्रत्येक जीवन को शक्ति प्रदान करेगी। राम मंगल है, राम ही अग्नि, सूर्य, चंद्र तीनों तत्वों में विद्यमान हैं। राम के नाम से ही इन तीन तत्वों का निर्माण होता है।

एम0एच0आर0डी0 नवाचार प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ0 मोहित गंभीर ने कहा कि राम के जीवन का दर्शन यही है कि किसी भी कार्य को अवसर समझना चाहिए न कि अवसरवादिता। उन्होंने राम के जीवन की प्रत्येक घटना को मानव जाति के लिए सन्देश बताया।

मुख्य अतिथि राष्ट्रवादी विचारक एवं

पत्रकार श्री पुष्पेन्द्र कुलश्रेष्ठ ने राम नाम अवलंबन एकू विषय पर विस्तृत रूप से भारतीय सनातन संस्कृति के मूल्यों पर प्रकाश डाला। श्री कुलश्रेष्ठ ने बताया कि वर्तमान परिवेश में अवध विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी दुनिया के अन्य विश्वविद्यालयों से कहीं ज्यादा है। प्रत्येक भारतवासी नालंदा विश्वविद्यालय के पूर्वजों की संतान है। वहां शास्त्रार्थ होता था और व्यापक विमर्श के उपरांत ही नीतियां तय होती थी। परंतु आज भारत में जाति और धर्म वर्ग की राजनीति ने काफी नुकसान किया है। डॉ0 भीमराव अंबेडकर के विचारों ने इस देश को एक नई दिशा दी है।

कैलीफोर्निया के सनीवेल के शिव दुर्गा मंदिर संस्थापक एवं अध्यक्ष कृष्ण कुमार पाण्डेय ने इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग कर भारतीय संस्कृति और प्रभु श्रीराम के जीवन आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि श्री राम आदर्श मूल्यों के पोषक हैं। वर्तमान परिस्थिति में प्रभु श्रीराम के कर्तव्य पालन का अनुसरण कर हम एक नई दिशा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा में संस्कार की आवश्यकता होती है क्योंकि व्यवसायिक शिक्षा रोजगार दे सकती है, संस्कार नहीं।

विशिष्ट अतिथि पूर्व राष्ट्रीय संयोजक बजरंगदल के प्रकाश शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति ने दुनिया को मार्ग दिखाया है। भारत के कण–कण में राम बसते हैं। सब कुछ राम में ही है और राम ही सब कुछ हैं। अयोध्या के महलों में राम बालक बनकर और एक आदर्श राजा, पुत्र, भाई और पति के रूप में भारतीय जनमानस के बीच विद्यमान हैं। महाकवि तुलसीदास ने कहा है कि कलयुग केवल नाम अधारा। सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।

तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय ई–सेमिनार के समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पार्श्व गायक अभिजीत भट्टाचार्य ने राम के जीवन का व्याख्यान देते हुए बताया कि राम अपने आप में विज्ञान एवं आयुर्वेद थे। राम का नाम संबल प्रदान करता है तो आवश्यकता पड़ने पर दवा भी बन जाता है। राम के वन जीवन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जंगल के संसाधन का उपयोग करके मनुष्य चाहे तो प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठा सकता है और जीवन को सरल, सहज एवं सुगम कर सकता है। विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 एसएन शुक्ल ने कहा कि वर्तमान विश्वव्यापी महामारी के समय भारत पूरे विश्व के लिए उदाहरण बना हुआ है। इसके पीछे कारण है हमारी वर्षो पुरानी संस्कृति, रहन सहन, खान–पान। राम का नाम प्रत्येक व्यक्ति लेता है चाहे वो किसी धर्म, पंथ, मजहब को मानता हो, क्योंकि राम इस भारतीय संस्कृति के पुरोधा है। राम प्रत्येक भारतीय के कण कण में है।

राजेश पांडे पूर्व संयोजक बजरंगदल ने प्रभु श्रीराम के जीवन आदर्शों पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि दुनिया में राम जी ही है जो सभी का बेड़ा पार कर सकते हैं। आई0ई0टी0 संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने संचालन करते हुए अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि राम नाम अवलम्बन एवं भारतीय संस्कृति को अपनाकर इस महामारी से जीत पायेंगे। राम के जीवन से जीने की कला सीख सकते हैं। जिस प्रकार उन्होंने प्राकृतिक जीवन जी कर संकटों से मुक्ति प्राप्त की, उसी प्रकार हमें भी कोरोना संकट से मुक्ति मिलेगी। धन्यवाद ज्ञापन रमेश मिश्र ने किया। तकनीकी सहयोग पारितोष त्रिपाठी, विनीत सिंह एवं संजीत पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में देश–विदेश से प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

विश्वविद्यालय में उपलब्धियों से परिपूर्ण कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित के तीन वर्ष

26 मई। अवध विश्वविद्यालय से निकलने वाली ज्ञान की ज्योति हर व्यक्ति तक पहुंचे, इसी सोच के साथ देश के सर्वाधिक जनसंख्या वाले प्रदेश के मध्य में बसे अवध–क्षेत्र के लगभग 10 जिलों के सभी महाविद्यालयों की सम्बद्धता के साथ ही पूर्वांचल के जिलों में उच्च–शिक्षा का क्षेत्राधिकार रखने वाले डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। उत्तर–प्रदेश के राज्यपाल व कुलाधिपति माननीय श्रीराम नाईक ने 27 मई, 2017 को डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के 19वें कुलपति के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के लोक प्रशासन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 मनोज दीक्षित को कुलपति नियुक्त किया। प्रो0 मनोज दीक्षित ने 27 मई, 2017 को विश्वविद्यालय में कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया। कुलपति के गरिमामयी पद को सुशोभित करते हुए 27 मई, 2020 को प्रो0 मनोज दीक्षित के कार्यकाल का तीन वर्ष पूरा होने जा रहा है। इन तीन वर्षों के कार्यकाल में इनके कुशल नेतृत्व एवं निर्देशन में संस्थान ने कई ऐतिहासिक रिकॉर्ड दर्ज किए हैं। विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों के विस्तार के साथ ही प्रशासनिक स्तर पर व्यापक सुधार देखने को मिला, जिससे विश्वविद्यालय की कार्य संस्कृति में सकारात्मक बदलाव भी हुआ। केंद्र सरकार की मंशा के अनुरूप परिसर में स्वच्छता अभियान को निरंतरता प्रदान की गई। इस अभियान के अंतर्गत परिसर को पॉलिथीन, तंबाकू, पान, गुटखा एवं अन्य सभी प्रकार के तंबाकू उत्पादों से मुक्त किया जा चुका है। परिसर के छात्रों एवं आगंतुकों की सुविधा के लिए रूसा परियोजना के अंतर्गत दो बड़े टॉयलेट ब्लाक्स का निर्माण कराया गया।

परिसर में व्यापक पौधरोपण अभियान चलाते हुए 26 हजार पौधे रोपित किए गए जिसमें वन विभाग के ग्रीन आडिट के अनुसार 24 हजार 52 पौधे जीवित एवं स्वस्थ पाए गये। रूसा परियोजना के अंतर्गत प्राप्त अनुदान राशि से विश्वविद्यालय के ईडीपी सेल स्थित कंप्यूटर सेंटर को पूर्णतया नवीनीकृत करते हुए वीडियो कांफ्रेंसिंग की सुविधा से सुसज्जित किया गया है। इसी परियोजना की अनुदान राशि से परिसर के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के छात्रों को प्रायोगिक सुविधा उपलब्ध कराने के लिए हाईटेक मीडिया लैब की स्थापना भी की गई है। विश्वविद्यालय परिसर के भौतिकी एवं इलेक्ट्रानिक विभाग व गणित एवं सांख्यिकी विभाग सहित अन्य नियमित विभागों में स्मार्ट क्लास रूम स्थापित किए गए हैं जिसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं उपलब्ध हैं। परीक्षाओं की संपूर्ण व्यवस्था ऑनलाइन की जा चुकी है। परीक्षा आवेदन–पत्र, प्रवेश–पत्र, परीक्षा परिणाम तथा प्रायोगिक परीक्षाओं के अंकों को भी ऑनलाइन व्यवस्था के अंतर्गत लाया गया है। परीक्षा केंद्रों पर ऑडियो–रिकार्डिंग सुविधा से युक्त सीसीटीवी कैमरों का अनिवार्य प्रयोग सुनिश्चित किए जाने से परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति कम हुई है। इसके अतिरिक्त स्नातक प्रथम वर्ष की संपूर्ण परीक्षाओं को ओएमआर आधारित प्रक्रिया के अंतर्गत संपन्न कराए जाने से भी नकल रोकने में सार्थक सहायता प्राप्त हुई है। महिला महाविद्यालय को छोड़कर अन्य महाविद्यालयों में स्वकेन्द्र प्रणाली समाप्त करते हुए सेंटर स्वैपिंग की व्यवस्था को लागू करना, परीक्षा से पूर्व प्रायोगिक परीक्षाओं का संपादन सुनिश्चित करना, प्रतिदिन तीन पालियों में परीक्षा संपन्न कराया जाना, परीक्षा केंद्रों द्वारा अपने यहां उपलब्ध संसाधनों का ऑनलाइन डिक्लरेशन करना जैसी अन्य व्यवस्थाएं भी लागू की गई हैं। मूल्यांकन की व्यवस्था में सुधार करते हुए पुस्तिकाओं की सौ प्रतिशत कोडिंग सुनिश्चित की गई है। मूल्यांकन के उपरांत परीक्षकों द्वारा ओ0एम0आर0 आधारित अंक पत्र पर अंको के अंकन की व्यवस्था लागू करने से परीक्षा परिणामों को तत्परता से घोषित किया जाना संभव हो सका है। (शेष पृष्ठ 03 पर)

कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित का कार्यकाल विस्तारित

20 मई। वर्तमान परिस्थियों के दृष्टिगत विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973 की धारा–12 (10) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्रो0 मनोज दीक्षित के कुलपति रूप में कार्यकाल को तीन माह की अवधि अथवा नियमित कुलपति की नियुक्ति होने तक या अग्रिम आदेशों तक विश्वविद्यालय के कुलपति पद के दायित्वों के निर्वहन के लिए विस्तारित किया है। कुलपति प्रो0 दीक्षित के कार्यकाल विस्तारित होने पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कार्यपरिषद के सदस्यों एवं कर्मचारियों ने बधाई दी।

मंथन

15 जून, 2020: आषाढ़, कृष्ण पक्ष, दशमी, विक्रम संवत् 2077

'जितना कठिन संघर्ष होगा जीत उतनी ही शानदार होगी'

मानसून और महामारी

देश में मानसून ने अपने तय समय पर दस्तक दी है। ब्रेसबी से मानसून का इंतजार करने वाले देशवासी इस बार मानसून आने से चिंतित नजर आ रहे हैं। इसकी मूल वजह कोरोना महामारी का प्रकोप है। कोरोना के संक्रमण से सबसे अधिक जूझ रहे महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान और दिल्ली जैसे राज्यों की सरकारों के लिए मानसून की दस्तक एक बड़ी समस्या है। आमतौर पर मानसून आने के साथ अस्पतालों में अचानक से डेंगू, मलेरिया और जापानी इंसेफेलाइटिस के मरीजों की संख्या बढ़ जाती है लेकिन इस बार कोविड–19 ने स्वास्थ्य समस्याओं को बहुत ज्यादा बढ़ा दिया है। संक्रमण काल में स्वास्थ्य के प्रति अधिक सचेत रहने की आवश्यकता होती है क्योंकि इस समय प्रतिरक्षा प्रणाली अपने न्यूनतम स्तर पर व संक्रामक शक्तियां अपने उच्चतम स्तर पर होती हैं। तेज धूप के बाद होने वाली गर्मी, फिर बारिश की ठंडी फुहारें, मौसम में नमी, वातावरण में उमस यह सब रोग उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं, कीटाणुओं आदि के पनपने के लिए सबसे अनुकूल माध्यम तैयार कर देते हैं। वैज्ञानिकों ने आशंका व्यक्त की है कि मानसून के चलते कोरोना वायरस के संक्रमण का दूसरा दौर शुरू हो सकता है। देश में हर साल बारिश के साथ कई वायरल बीमारियों का संक्रमण तेजी से बढ़ता है। बारिश के दौरान डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियां तेजी से फैलती है और लोगों को अपना शिकार बनाती है। सामान्य तौर पर डेंगू और मलेरिया भी शरीर के उन्हीं अंगों को प्रभावित करता है जिन पर सबसे ज्यादा प्रभाव नोबल कोरोना वायरस का होता है। ऐसे में अगर किसी व्यक्ति को बारिश में भीगने से साधारण सर्दी, जुकाम और बुखार होता है तो वह भी कोरोना होने की आंशका से डर जाएगा। एक अनुसंधान के मुताबिक, कोरोना संक्रमण से फिलहाल निजात मिलने की उम्मीद नहीं है, बल्कि आने वाले बारिश के मौसम और सर्दी में यह तीन गुना अधिक तेजी के साथ बढ़ सकता है। संक्रमण से बचने के लिए लोगों को एक–दूसरे से तकरीबन 6 फुट की दूरी बरतने को कहा जा रहा है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है, हम सभी को साफ–सफाई के प्रति सामाजिक प्रतिबद्धता भी दिखानी होगी।

एकता और मित्रता का प्रतीक है ओलम्पिक खेल

रजनीश पाण्डेय

ओलम्पिक खेलों की दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित प्रतियोगिता है। ओलम्पिक में पदक जीतना किसी भी देश के लिए बेहद गौरवशाली क्षण होता है। प्रतिवर्ष 23 जून को अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक दिवस का आयोजन किया जाता है। इसी दिन अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की स्थापना हुई थी। इसका श्रेय फ्रांस के पियरे द कुबर्तिन को जाता है, जिनके अथक एवं अनवरत प्रयासों से ही 23 जून 1894 को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति की स्थापना के बाद 1896 से आधुनिक ओलम्पिक खेलों का आयोजन शुरू हुआ।

प्राचीन ओलम्पिक की शुरूआत 776 बीसी में मानी जाती है। ओलंपिया पर्वत पर खेले जाने के कारण इसका नाम ओलम्पिक पड़ा। लेकिन बाद में धीरे–धीरे ओलम्पिक खेलों का महत्व गिरने लगा। ई० 393 में ओलम्पिक खेल यूनान में बंद हो गए। वर्ष 1896 में ओलम्पिक खेल यूनान की राजधानी एथेंस में फिर से आयोजित किया गया। दुनिया में ओलम्पिक खेलों का आयोजन हर चार वर्ष पर अंतरराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति की देख–रेख में किया जाता है। इसमें ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेल, शीतकालीन ओलंपिक खेल और युवा ओलम्पिक खेल शामिल हैं। इसका मुख्यालय लौसन, स्विट्जरलैंड में है। इस वक्त विश्व की कुल 206 राष्ट्रीय ओलम्पिक समितियां इसकी सदस्य हैं। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा आयोजित पहला ग्रीष्म कालीन ओलम्पिक 1896 में यूनान के एथेंस में हुआ। पहला शीतकालीन ओलम्पिक 1924 में फ्रांस के चेमोनिक्स में आयोजित किया गया था। 1992 के बाद ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन ओलम्पिक दोनों अलग–अलग आयोजित किया जाने लगा।

ओलम्पिक खेल के झंडे में आपस में जुड़े पाँच गोलों को दिखाया गया है जो पांचों महाद्वीपों के मध्य एकता और मित्रता का प्रतीक हैं। इस दिन को मनाने का मुख्य मकसद खेलों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हर वर्ग, आयु के लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देना है। जब 1948 में पहले ओलम्पिक दिवस का आयोजन किया गया था, तो इसमें सिर्फ नौ देश ही शामिल थे। पिछले कई वर्षों से ओलम्पिक दिवस पर दौड़ का आयोजन पूरे विश्व में किया जा रहा है। पहली बार ओलम्पिक दिवस पर दौड़ की शुरुआत 1987 में की गयी थी। इस दौड़ में हर उम्र के बच्चों, पुरुषों व महिलाओं को शामिल किया जाता है।

पहली बार 1900 में भारत की तरफ से सिर्फ एक एथलीट (नॉर्मन प्रीटचार्ड) ने ओलम्पिक में हिस्सा लिया। उन्होंने एथलेटिक्स में 2 सिल्वर मेडल जीते। भारत ने 1920 में पहली बार ग्रीष्मकालीन ओलंपिक खेलों में अपनी टीम भेजी। वहीं 1964 में शुरू हुए शीतकालीन ओलम्पिक खेलों में भारत ने हिस्सा लिया और ये सिलसिला अभी जारी है। भारत ने ओलंपिक खेलों के इतिहास में अब तक कुल 28 पदक जीते हैं। जिसमें 9 स्वर्ण, 7 रजत और 12 कांस्य पदक शामिल हैं। भारतीय टीम ने फील्ड हॉकी में 8 स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य पदक जीते हैं। भारत की तरफ से वर्ष 2008 में बीजिंग ओलम्पिक में पहली बार अभिनव बिंद्रा ने पुरूष वर्ग में 10 मीटर एयर राइफल प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीता। वो भारत की तरफ से ओलम्पिक गेम्स में किसी भी खेल में व्यक्तिगत तौर पर स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले खिलाड़ी बने। वहीं विजेंदर सिंह बॉक्सिंग में भारत की तरफ से पहली बार रजत पदक जीतने वाले मुक्केबाज बनें। उन्होंने 2008 के बीजिंग ओलम्पिक में कांस्य और 2012 के ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक में रजत पदक जीता।

साइना नेहवाल भारत की तरफ से बैडमिंटन में ओलम्पिक में कांस्य पदक जीतने वाली पहली महिला खिलाड़ी बनीं। वहीं मैरी कॉम पहली बार भारत के लिए बॉक्सिंग में कांस्य पदक जीतने वाली महिला मुक्केबाज बनीं।

महिला पहलवान साक्षी मलिक ने भी भारत के लिए ओलंपिक में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा था। वहीं पी० वी० सिंधू ओलम्पिक में बैडमिंटन में रजत पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी बनीं थीं।

अच्छी सेहत के लिए सुरक्षित आहार जरूरी

राजेश कुमार यादव

सभी प्राणी स्वस्थ और सक्रिय जीवन बिताने के लिए भोजन करते हैं। भोजन में अनेक पोषक तत्व होते हैं जो शरीर का विकास करते हैं, उसे स्वस्थ रखते हैं और शक्ति प्रदान करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, दूषित खाना या बैक्टीरिया युक्त खाने से हर साल दस में से एक व्यक्ति बीमार होता है। दुनियाभर की आबादी के हिसाब से देखा जाए तो यह आंकड़ा साठ करोड़ से भी ज्यादा है। विश्वभर में विकसित और विकासशील देशो में हर साल भोजन और जल जनित बीमारियों से अनुमानतः तीस लाख लोगों की मौत हो जाती है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दिसंबर 2018 में खाद्य और कृषि संगठन के सहयोग से विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस मनाने का ऐलान किया गया था जिसके बाद इसे 07 जून 2019 से प्रत्येक वर्ष मनाया जाने लगा। विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस को मनाने का उद्देश्य सुरक्षित खाद्य मानकों को बनाए रखने में जागरूकता पैदा करना और खाद्य जनित बीमारियों के कारण होने वाली मौतों को कम करना है। इस दिवस को मनाने का ध्येय यह सुनिश्चित करना है कि हर व्यक्ति को पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित और पौष्टिक भोजन मिल सके। खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता एवं इसकी आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र ने दिशा–निर्देश दिए हैं। जिनमें सरकारों को सभी के लिये सुरक्षित और पौष्टिक भोजन सुनिश्चित करना, कृषि और खाद्य उत्पादन में अच्छी प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता पर जोर देना, व्यापार करने वाले लोगों को यह सुनिश्चित करना कि खाद्य पदार्थ सुरक्षित है, सभी उपभोक्ताओं को सुरक्षित, स्वस्थ और पौष्टिक भोजन प्राप्त करने का अधिकार, और खाद्य सुरक्षा एक साझा जिम्मेदारी आदि शामिल हैं।

'सुरक्षित, पौष्टिक और पर्याप्त भोजन' अच्छे स्वास्थ्य के लिए बेहद जरूरी है। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफ0एस0एस0ए0आई0) ने राज्यों द्वारा सुरक्षित खाद्य उपलब्ध कराए जाने के प्रयासों के संदर्भ में खाद्य सुरक्षा इंडेक्स विकसित किया गया है। इस इंडेक्स के माध्यम से खाद्य सुरक्षा के पाँच मानदंडों पर राज्यों का प्रदर्शन आँका जाता है। जिसमें मानव संसाधन और संस्थागत प्रबंधन, कार्यान्वयन, खाद्य जाँच अवसंरचना और निगरानी, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, उपभोक्ता सशक्तीकरण शामिल हैं ।

वर्ष 2019 में भारत सरकार द्वारा बैट्री से चलनेवाले 'रमन–1.0' नामक नवीन उपकरण को लांच किया गया है। यह उपकरण खाद्य तेलों, वसा और घी में की गई मिलावट का एक मिनट से भी कम समय में पता लगाने में सक्षम है। स्कूलों तक खाद्य सुरक्षा का मुद्दा ले जाने के लिये 'फूड सेफ्टी मैजिक बॉक्स' नामक नवाचारी समाधान की भी शुरुआत की गई है।

शरीर, आत्मा और मन का परस्पर जोड़ है योग

सौरभ सिंह

'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' की शुरुआत भारत के अनुमोदन पर की गयी। भारत के प्रधानमन्त्री ने 27 सितम्बर 2014 को 'संयुक्त राष्ट्र' की वार्षिक बैठक में अपने वक्तव्य में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा योग को अपनाए जाने के लिए सभी देशों का आह्वान किया था। भारत के इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए 14 दिसम्बर 2014 को 'संयुक्त राष्ट्र' के 177 सदस्यों ने पूर्ण बहुमत से इसे पारित किया और प्रतिवर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाना स्वीकृत हुआ। 21 जून के दिन पूरे विश्व में विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन किए जाते हैं।

'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'युज' शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है 'जुड़ना'। 'योग' सम्भवतः विश्व के लिए नया शब्द हो सकता है परन्तु भारत में 'योग' की उत्पत्ति आदिकाल से मानी जाती है। महर्षि पतंजलि को योग विद्या का जनक कहा जा सकता है।

सामान्य अंकगणितीय भाषा में 'योग' का तात्पर्य दो या दो से अधिक संख्याओं के 'जोड़' से है। ठीक उसी प्रकार यहाँ भी योग का तात्पर्य 'जोड़' से ही है परन्तु यहाँ पर दो संख्याओं का जोड़ नहीं होता, बल्कि शरीर, आत्मा और मन का परस्पर जोड़ है। विश्व में योग कला सर्वाधिक भारत में प्रचलित है। भारत में हिन्दू धर्म के साथ–साथ बौद्ध और जैन धर्म के शास्त्रों में भी 'योग' का वर्णन मिलता है। सामान्य शब्दों में योग को एक प्रकार का व्यायाम माना जा सकता है। भारतीय चिकित्सा पद्धति में भी योग को विशेष स्थान प्राप्त है।

योग को चार भागों में बांटा गया हैः राजयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग। कर्मयोग में कर्म को प्रधान माना गया है। इसके अनुसार व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन उसके द्वारा किये गए कर्मों पर आधारित एवं प्रभावित रहता है। 'राजयोग' में ही 'प्राणायाम' व विभिन्न प्रकार के आसन आते हैं। आमतौर पर आसन व प्राणायाम को ही सम्पूर्ण रूप से योग की संज्ञा दे दी जाती है परन्तु यह पूर्ण रूप से सत्य नहीं है। आसन व प्राणायाम योग के अंग मात्र हैं। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के आसन व प्राणायाम आते हैं जिनके प्रतिदिन अभ्यास से शरीर निरोगी बना रहता है। भक्ति योग जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ईश्वर की भक्ति से सम्बन्धित है। इस में ईश्वर तक पहुंचने के मार्ग का वर्णन है। 'ज्ञानयोग' भक्ति योग के बाद की स्थिति को कहा गया है। जब आत्मा ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाती है तो यह ज्ञानयोग की स्थिति मानी जाती है।

योग को विज्ञान का दर्जा प्राप्त है। यह न केवल शारीरिक, अपितु मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यन्त उपयोगी माना गया है। प्रतिदिन योग करने से न केवल बीमारियों से बचा जा सकता है, बल्कि, योग से गंभीर और असाध्य रोगों का इलाज भी सम्भव है। योग करने से व्यक्ति में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। कोरोना काल में प्रतिदिन योग करने की सलाह भी दी जा रही है। योग के माध्यम से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि की जा सकती है जो कोरोना महामारी से बचे रहने का एक सटीक उपाय है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय परिसर की गतिविधियों की झलक मिलती है। बुद्ध और विश्व पत्रकारिता दिवस पर लेख बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक रहे।

–सिद्धान्त सिंह

सुविचार

व्यक्ति अपने कर्म से महान बनता है, अपने जन्म से नहीं।

–चाणक्य

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो० मनोज दीक्षित, कुलपति
संरक्षक
डॉ० विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
रामचन्द्र अवस्थी, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ० राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ० अनिल कुमार विश्वा
डॉ० राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, राजेश एवं साक्षी

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

कोविड–19 की वजह से टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ी हैः प्रो0 सिनक्लेयर

31 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट एंड सॉफ्ट स्किल डेवलपमेंट सेल द्वारा "टेक्नोलॉजी री–डिफाइनिंग ग्लोबल इकोनामी पोस्ट कोविड–19" विषय पर इंटरनेशनल वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने विश्वव्यापी महामारी में इंटरनेट के माध्यम से अध्ययन की गुणवत्ता और कौशल पर जोर दिया। कुलपति ने बताया कि यदि ऑनलाइन प्लेटफार्म को विकसित करना है तो इसके लिए हाई स्पीड इंटरनेट को प्रत्येक गांव और कस्बों तक पहुंचाना होगा। उन्होंने बताया कि क्वालिटी स्किल पर हम सभी को बहुत ज्यादा काम करना होगा।

वेबिनार के मुख्य अतिथि ग्लोबल माइनिंग कनाडा के एडवाइजरी डायरेक्टर प्रो0 बॉब सिनक्लेयर ने कहा कि कोविड–19 की वजह से टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ी है। इससे आने वाले समय में विश्वभर में व्यापक बदलाव देखने को मिलेगा। विश्व की अर्थव्यवस्था पूरी तरीके से ऑनलाइन टेक्नोलॉजी पर संचालित हो रही है। इसकी सिक्योरिटी पर भी हम सभी को ध्यान देना होगा। प्रो0 सिनक्लेयर ने नई टेक्नोलॉजी और मैटेरियल साइंस की भविष्य में उपयोगिता पर वृहद जानकारी प्रदान की।

विशिष्ट अतिथि के रूप में वियतनाम के प्रो0 एलेक्स साउथ ने इंटरनेट ऑफ थिंग्स, रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग की उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान की। जेपी मॉर्गन के वाइस प्रेसिडेंट निधीश सिंह ने ग्लोबल इकोनामी में भारत की भूमिका पर अपना व्याख्यान दिया। मल्टी नेशनल कंपनी के सीईओ सुमित अग्रवाल ने अमेरिका से जुड़कर छोटे–छोटे प्लेटफार्म को नए तरीके से कम समय में विकसित करने के बारे में बताया। डायरेक्टर के0 जी0 केतन गांधी ने ग्लोबल इकोनामी, जीडीपी एवं इनोवेशन पर अलग–अलग तरीकों से कार्य करने के बारे में विस्तृत जानकारी दी। एच0आर0 एसोसिएशन ऑफ इंडिया के प्रेसिडेंट विकास वत्स ने ऑटोमेशन और टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन के बारे में व्याख्यान दिया। प्रो0 सोलोमर मागला ने डाटा एनालिसिस की उपयोगिता के बारे में बताया। डॉ0 मनप्रीत मन्ना, फॉर्मर डायरेक्टर एआईसीटीई ने लैंग्वेज और स्किल डेवलपमेंट आवश्यक बताया। डीन पोस्टर अरगुलस फिलीपींस ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को आने वाला भविष्य बताया। संस्कृति यूनिवर्सिटी की डायरेक्टर डॉ0 दिव्या तंवर ने ऑनलाइन एजुकेशन में उत्पन्न समस्याओं पर चर्चा की। इसी क्रम में एक्सपर्ट डॉ0 गिना अल्कोरिजा ने पर्यटन में होने वाले परिवर्तन और भविष्य में वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव के बारे में विस्तृत चर्चा की।

कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्लेसमेंट सेल की डायरेक्टर एवं वेबिनार की संयोजिका डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने टेक्नोलॉजी आधारित अर्थव्यस्था की आवश्यकता और नवीन संभावनाओं के बारे में बताया। कार्यक्रम में प्रति कुलपति प्रो0 एसएन शुक्ल, वाणिज्य संकाय के अध्यक्ष प्रो0 अशोक शुक्ला, आई0ई0टी0 संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्लेसमेंट सेल के को–ऑर्डिनेटर राजीव कुमार ने किया। इस वेबिनार में जैनेंद्र प्रताप, अनुराग सिंह और डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी की विशेष भूमिका रही।

विश्वविद्यालय में उपलब्धियों से परिपूर्ण कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित के तीन वर्ष

पृष्ठ 01 से आगे...

प्रोफेशनल कोर्सेज एमबीबीएस, बीडीएस, बीटेक एवं एमटेक की उत्तर पुस्तिकाओं के लिए ऑनलाइन मूल्यांकन की व्यवस्था लागू की गई है। विश्वविद्यालय द्वारा समस्त प्रवेशित छात्रों को यूनिक आइडेंटिटीफिकेशन नंबर (यूआईएन) से जोड़ते हुए इनसे संबंधित डाटा इस नंबर से इंटीग्रेट किया गया है। इसके माध्यम से छात्र कभी भी अपने से संबंधित विश्वविद्यालय रिकॉर्ड को ऑनलाइन प्राप्त कर सकता है।

दो वर्षों के कालखंड में विश्वविद्यालय द्वारा स्ववित्तपोषित योजना के अंतर्गत तीन दर्जन से अधिक नवीन पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। विश्वविद्यालय परिसर स्थित महामना मदन मोहन मालवीय केंद्रीय पुस्तकालय का पूर्णतया डिजिटलाइजेशन किया गया है। पुस्तकालय में छात्रों के अध्ययन कक्ष का जीर्णोधार कर दिया गया है। विश्वविद्यालय में जमा शोध–ग्रंथों को स्कैन करा कर डिजिटल स्वरूप में संरक्षित करने के साथ शोधगंगा पर अपलोड किया जा रहा है। पांच हजार से अधिक शोध–ग्रंथ शोधगंगा पर अपलोड किए जा चुके हैं।

रैगिंग अथवा अन्य किसी अप्रिय घटना की सूचना विश्वविद्यालय प्रशासन को यथा समय वीडियो, फोटोग्राफ तथा मैसेज के माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए विकसित किए गए रक्षक मोबाइल एप की उपलब्धता परिसर के छात्रों के साथ संबद्ध महाविद्यालयों के छात्रों में भी विस्तारित की जा रही है। इस मोबाइल एप में दो नई सुविधाएं जोड़ी गई हैं, पहली नोटिस बोर्ड जिसके माध्यम से छात्रों को परीक्षा अथवा विश्वविद्यालय से संबंधित किसी भी सूचना से तत्काल अवगत कराया जा सकता है, दूसरा केंद्रीय पुस्तकालय के डिजिटल डाटा को इस एप से जोड़ दिया गया है जिससे छात्र अपने मोबाइल के द्वारा ही पुस्तकालय में अपनी पसंद की पुस्तक की उपलब्धता का अवलोकन कर सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा डाक विभाग से अनुबंध करते हुए न्यूनतम शुल्क के साथ छात्रों की उपाधियों की होम डिलीवरी सुनिश्चित की गई है। इस योजना का छात्र उपयोग कर रहे हैं।

नवीन परिसर में इंस्टीट्यूट ऑफ अर्थ साइंसेज की स्थापना करते हुए पूर्व संचालित पर्यावरण विज्ञान विभाग को इसके अंतर्गत लाया गया है। अन्य संबंधित पाठ्यक्रमों में जैसे भूगोल, भूगर्भ विज्ञान इत्यादि को इससे जोड़े जाने की योजना है। रूसा परियोजना की अनुदान राशि से अंटार्कटिका रिसर्च सेंटर की स्थापना का कार्य प्रगति पर है। पर्यावरण विज्ञान विभाग के संरक्षण में अयोध्या के मंदिरों से निकलने वाले फूलों से इत्र बनाने का प्लांट कन्नौज के सुगंध एवं सूरत विकास केंद्र के सहयोग से लगाया जा रहा है। फूलों की उपलब्धता के लिए नाका हनुमानगढ़ी समेत अन्य मंदिरों से भी अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए हैं। परिसर में इंस्टीटयूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज की स्थापना करते हुए पूर्व संचालित फिजिकल एजुकेशन के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों से इससे संबद्ध किया गया है। खिलाड़ी एवं छात्रों के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए गए। मानविकी एवं भाषा के संदर्भ में सुविधाओं के उन्नयन की दृष्टि से परिसर में डॉ0 राममनोहर लोहिया शोध–पीठ, रत्नाकर शोध–पीठ एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोध–पीठ की स्थापना की गई है। छात्रों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने एवं उनके व्यक्तित्व विकास के लिए प्लेसमेंट एवं पर्सनालिटी डेवलपमेंट सेल का गठन किया गया। 16 वर्षों से निष्प्रयोज्य पड़े तीन मंजिला दीक्षा भवन की मरम्मत एवं उच्चीकरण के उपरांत नव स्थापित पाठ्यक्रमों के साथ पूर्व से संचालित शारीरिक शिक्षा विभाग, समाज कार्य विभाग एवं एमएड विभाग की कक्षाओं को भी इस भवन में स्थापित किया गया है।

परिसर के विभिन्न विभागों के शिक्षकों की वर्षों से लंबित प्रोन्नति प्रक्रिया को गति प्रदान करते हुए, प्रोन्नति संबंधी चयन समिति की बैठक संपन्न कराई गई और परिसर के आठ नियमित विभागों के सभी शिक्षकों की प्रोन्नति की जा चुकी है। महिला छात्रावास में वाशिंग मशीन, वाटर कूलर, सेनेटरी नैपकिन वेंडिंग एवं डिस्पोजल मशीन लगाए जाने की व्यवस्था की गई। महिला छात्रावास के मुख्य द्वार तथा बाउंड्री वॉल पर सुरक्षा निगरानी के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। छात्रावास के प्रवेश द्वार एवं मेस में बायोमेट्रिक उपस्थिति मशीन भी लगाई गई है।

बंद पड़े विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सकों की नियुक्ति कर प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाओं को उच्चीकृत भी किया गया है। विश्वविद्यालय के 250 दर्शक क्षमता वाले संत कबीर सभागार का यूजीसी एवं रूसा परियोजना के अनुदान राशि से जीर्णोद्धार कराते हुए अधिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जा चुका है। आईटी परिसर में 150 दर्शक क्षमता का कल्पना चावला सभागार भी विकसित किया गया। विभिन्न विभागों को सम्मिलित रूप से एकीकृत शोध उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने के उद्देश्य से सेंट्रल इंस्ट्रूमेंटेशन फैसिलिटी भवन के निर्माण के लिए रूसा परियोजना के अंतर्गत प्राप्त अनुदान धनराशि से भवन का निर्माण कराया गया। श्रीराम शोध–पीठ के अंतर्गत अयोध्या शोध संस्थान द्वारा दो शोध छात्रवृत्ति प्रारंभ किए जाने का निर्णय लिया गया।

यूजीसी की 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत प्राप्त अनुदान राशि से परिसर की जर्जर हो चुकी बाउंड्री का पुनर्निर्माण कराया गया। विज्ञान एवं मानविकी विषयों में अध्ययन अध्यापन के लिए विश्वस्तरीय शैक्षिक एवं शोध कार्यों के विकास के लिए दो दर्जन से अधिक राष्ट्रीय स्तर के शोध संस्थानों के साथ अनुबंध स्थापित किए गए हैं। विश्व बैंक एवं मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा तकनीकी शिक्षा गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय के तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान को अनुदान परियोजना के अंतर्गत 15 करोड़ के अनुदान प्राप्ति हेतु चयनित किए जाने के उपरांत डॉ0 अंबेडकर इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी बैंगलोर एवं विश्वविद्यालय के बीच ट्यूनिंग एग्रीमेंट किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत तकनीकी संस्थान की सुविधाओं में व्यापक सुधार किया जा रहा है। एमएचआरडी एवं स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा गुणवत्ता सुधार के लिए आईटी में ऑनलाइन सर्वे भी किया जा चुका है। वित्तीय पारदर्शिता के लिए परिसर के पाठ्यक्रमों के प्रवेश शुल्क सहित विश्वविद्यालय के कार्यों से संबंधी शुल्कों को ऑनलाइन माध्यम से जमा कराना सुनिश्चित किया गया है। परिसर में सिंगल विंडो व्यवस्था का व्यापक उपयोग हो रहा है। महाविद्यालयों को मुख्यधारा से जोड़ने तथा उनके शैक्षणिक व प्रशासनिक रूप से संचालन हेतु महाविद्यालय विकास परिषद का गठन किया गया। क्रीडा परिषद, आइक्यूएसी, सेवायोजन एवं मंत्रणा केंद्र के साथ संचालित पाठ्यक्रमों की अध्ययन समितियों तथा शोध समितियों का पुनर्गठन करते हुए शैक्षणिक एवं क्रीड़ा संबंधित क्रियाकलापों को गति प्रदान की गई। छात्र हित में एंटी रैगिंग, ग्रिवांसेस एवं प्रिवेंशन फ्रॉम सेक्सुअल हैरेसमेंट सेल का गठन कर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अयोध्या को विश्वस्तर पर पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय की चाहरदीवारी पर पौराणिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों का परिसर के छात्र–छात्राओं द्वारा चित्रण किया गया। कुलपति जी के कुशल नेतृत्व में भारतीय संस्कृति एवं प्रबुद्ध परम्परा को संजोने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा समरसता कुम्भ का आयोजन किया गया। इस समरसता कुंभ में विभिन्न प्रांतों से लगभग 35 सौ प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। उत्तर प्रदेश सरकार एवं अवध विश्वविद्यालय के संयुक्त संयोजन में 26 अक्टूबर, 2019 को राम की नगरी अयोध्या में राम की पैड़ी पर छात्र–छात्राओं एवं स्वयंसेवकों की मदद से चार लाख दस हजार दीये जलाने का कीर्तिमान गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में पुनः दर्ज किया गया।

19 सितम्बर, 2019 को डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के 24 वें दीक्षांत समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ0 रमेश पोखरियाल निशंक जी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनन्दीबेन पटेल जी ने की। इस दीक्षांत समारोह में कुल 106 स्वर्ण पदक जिसमें 26 कुलपति स्वर्णपदक, 63 कुलाधिपति स्वर्णपदक तथा दान स्वरूप पदक के रूप में 17 स्वर्णपदक दिये गये। इस दीक्षांत समारोह में कुल 719 छात्रों को उपाधियां प्रदान की गई। इसी क्रम में स्वामी विवेकानंद सभागार में सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। 02 अक्टूबर 2019 को अवध विश्वविद्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने प्लास्टिक मुक्त भारत, समृद्ध भारत, हरा भरा भारत, पर्यावरण जागरूकता और स्वच्छता अभियान के संदेशों के साथ विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, एनसीसी कैडेटों एवं छात्र–छात्राओं के साथ पैदल मार्च कर जागरूकता रैली निकाली। 24 वें दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय की कुलाधिपति महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने अपने उद्बोधन में प्राथमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालय में भ्रमण कराने की बात कही थी। इसी क्रम में कुलपति के निर्देशन में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के बच्चों को परिसर में संचालित शैक्षिक गतिविधियों एवं परिसर में स्थापित महामना मदन मोहन मालवीय केन्द्रीय पुस्तकालय, लैब, पार्क आदि का भ्रमण कराया गया।

प्रो0 दीक्षित के निर्देशन में परिसर के छात्र–छात्राओं के लिए प्लेसमेंट एवं पर्सनालिटी डेवलपमेंट सेल'' का गठन हुआ। कुलपति प्रो0 दीक्षित की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में दो दिवसीय अवध मिथिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अश्वनी चौबे, स्वास्थ्य राज्यमंत्री, भारत सरकार, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 सतीश द्विवेदी, मंत्री बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश सरकार, अयोध्या मेयर ऋषिकेश उपाध्याय, अयोध्या जिलाधिकारी अनुज झा रहे। इसी क्रम में प्रो0 दीक्षित के कुशल दिशा–निर्देशन में 'श्रीरामः वैश्विक सुशासन के प्रणेता' विषय पर एक दिवसीय विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केरल के राज्यपाल माननीय आरिफ मोहम्मद खान, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात विश्लेषक एवं वरिष्ठ पत्रकार तारिक फतेह, महानिदेशक भारतीय संस्कृति परिसर के अखिलेश मिश्र, विधि वेत्ता अशोक मेहता उपस्थित रहे। प्रो0 दीक्षित के कुशल नेतृत्व में अवध के राम विषय पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चलाये गये स्वच्छ भारत अभियान को आगे बढ़ाते हुये कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने विश्वविद्यालय परिसर में शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं को स्वच्छ वातावरण बनाने के लिये प्रेरित किया। कुलपति प्रो0 दीक्षित के निर्देशन में कई अन्तरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों को आयोजित किया गया। यहां के विद्यार्थियों ने विभिन्न खेलों में उत्तर क्षेत्रीय, राज्यस्तरीय तथा अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। वैश्विक महामारी कोरोना में जब पूरा देश लॉकडाउन में है, तब प्रो0 दीक्षित के निर्देशन में ऑनलाइन पठन–पाठन सुचारू रूप से संपादित होता रहा। इस दौरान परिसर के विभिन्न पाठ्यक्रमों की ऑनलाइन परीक्षाएं भी सम्पन्न की गयी।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की लगभग दो दर्जन वेबिनार का भी आयोजन किया गया। प्रो0 दीक्षित ने निरन्तर कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाव के लिए प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से अपील की। इसी क्रम में दिनांक 26 मई, 2020 से राम नाम अवलम्बन एकू विषय पर तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय ई–सेमिनार का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल रही।

•अवध विश्वविद्यालय के न्यू कैम्पस में बन रहे परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन का नामकरण भगवान शिव के अवतार गोरक्षनाथ के नाम पर ''महायोगी गुरु गोरक्षनाथ भवन'' किया गया।

•उपाधि प्राप्त करने के लिए छात्र–छात्राओं को ऑनलाइन आवेदन करना होगा और शुल्क के साथ पोस्टल चार्जेज का भी ऑनलाइन भुगतान करते हुए आवेदन फार्म को पूरित करना होगा।

•अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में एमसीए विभाग द्वारा "जावा फुल स्टैक" विषय पर 09–13 जून, 2020 को पांच दिवसीय ई–वर्कशॉप एवं वर्चुअल लैब का आयोजन किया गया।

•"राम नाम अवलम्बन एकू" विषय पर तीन दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय ई–सेमिनार के अनुक्रम में 26 मई, 2020 को 'एक शाम संगीत के नाम' पर ई– सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया।

विषम परिस्थितियों में सभी को आत्मनिर्भर बनना होगाः कुलपति

10 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आई0ई0टी0 संस्थान में 15 जून 2020 को आयोजित होने वाले आईडियाथॉन के तहत ब्रेनस्टॉर्मिंग फॉर आईडियाथॉन का ऑनलाइन आयोजन किया गया है। महामारी के इस दौर में अप्रवासी मजदूर अपने घरों को वापस आ रहे है। ऐसे में शैक्षिक संस्थानों का दायित्व बढ़ जाता है कि उन अप्रवासी मजदूरों के बारे में सोचें और उस दिशा में कार्य करें।

ब्रेनस्टॉर्मिंग फॉर आईडियाथॉन को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने बताया कि कोविड–19 की वजह से आज सभी को आत्मनिर्भर बनना होगा। आत्मनिर्भर बनने के लिए यह देखना होगा कि अपने आस–पास किन–किन वस्तुओं एवं सेवाओं की आवश्यकता पड़ेगी। कुछ अविष्कार भी करने होंगे। ऐसे में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका बढ़ जाती है। कुलपति ने कहा कि संस्थानों को यह सुनिश्चित करना होगा कि जो मजूदर अपने घरों को वापस आ रहे है उनके लिए रोजगार का कैसे सृजन किया जाए कि वे अपने को इस विषम परिस्थिति में भी स्थापित कर सके। इसके लिए छात्रों एवं अन्य संगठनों को अप्रवासी मजदूरों की मदद के लिए आगे आना होगा।

कार्यक्रम में दिल्ली के आईपी कुरेट्स लैब्स वेरिसपेर के बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर परम दोशी ने कहा कि आज के समय में तकनीकी का इस्तेमाल बढ़ गया है। तकनीकी के माध्यम से नए–नए इनोवेशन करके प्रवासी मजदूरों को इस कार्य के लिए तैयार कर नए स्वरोजगार उपलब्ध करा सकते हैं। इस कार्य में भारत सरकार भी मदद कर रही है। द स्टार्ट अप लैब दिल्ली की सीईओ श्रुति अग्रवाल ने बताया कि हमें अपने आइडिया को जमीन पर उतारने के लिए थोड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। हमारे दिमाग में जब कोई नया आईडिया विकसित होता है, तो उस आईडिया को आगे बढ़ाते हुए वास्तविक स्वरूप में परिवर्तित करना होगा। टेडेक्स के स्पीकर आईआईटी दिल्ली के आशुतोष कश्यप ने बताया कि हमें अपने दिमाग में आए हुए किसी भी आईडिया को खराब नहीं समझना चाहिए। उसका प्रयोग जरूर करना चाहिए, तभी एक नई खोज हो सकती है। अन्य वक्ता के रूप में इंजीनियर अमित भाटी ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने किया। धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के समन्वयक अमितेश पंडित तथा विनीत सिंह द्वारा किया गया।

ऑनलाइन मोड टीचिंग एक बेहतर विकल्प हैः प्रो0 यूसुफ

17 मई। एम0सी0ए0 विभाग द्वारा "नेक्स्ट जेनरेशन कंप्यूटिंग सिस्टम" विषय पर इंटरनेशनल वेबिनार का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि ऑस्ट्रेलिया के इंटरनेशनल फेडरेशन यूनिवर्सिटी के प्रति कुलपति प्रो0 तलाल यूसुफ ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस रोबोटिक्स और इलेक्ट्रानिक लर्निंग को आने वाले समय का सबसे ज्यादा भरोसेमंद टेक्नोलॉजी बताया। प्रो0 यूसुफ ने बताया कि ऑनलाइन मोड में टीचिंग इस वक्त एक बेहतर विकल्प है। इससे भविष्य में बड़े कोर्सेज में कम फीस पर भी अच्छी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। वेबिनार की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने बताया कि ऑनलाइन टेक्नोलॉजी का जीवन के हर क्षेत्र में अलग–अलग तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है। नेक्स्ट जेनरेशन कंप्यूटिंग सिस्टम का हेल्थ फैमिली और समाज में अलग–अलग प्रभाव पड़ेगा। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रति कुलपति प्रो0एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि आज हम टेक्नोलॉजी पर निर्भर होते जा रहे हैं। आने वाले समय में टेक्नोलॉजी हमारे समाज का अहम हिस्सा बन जाएगा।

आत्म निर्भर भारत बनाने पर जोर देना होगाः प्रो0 सिंह

20 मई। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग एवं तकनीकी संस्थान के संयुक्त संयोजन में "कोविड–19 महामारीः अवसर एवं चुनौतियां" विषय पर 19–20 मई, 2020 को दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि चंद्रशेखर आजाद विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति प्रो0 डी0 आर0 सिंह ने कहा कि कोविड–19 ने हम सभी के जीवन को प्रभावित किया है। आज हमें आत्म निर्भर भारत बनाने पर जोर देना होगा। उन्होंने प्रधानमंत्री के लोकल फॉर वोकल की बात दोहराई। कृषि क्षेत्र को आत्म निर्भर बनाने की जरूरत पर बल दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि कोविड–19 महामारी से उत्पन्न होने वाली परिस्थिति से हम सभी को सतर्क रहने की जरूरत है। जहां देशव्यापी लॉकडाउन में आवागमन बन्द हुआ है, वहीं देश में इसका सकारात्मक पक्ष यह भी रहा कि वायु प्रदुषण कम हो गया है। इसका नकारात्मक पक्ष यह रहा कि बॉयोमेडिकल वेस्ट का प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो गया है। प्रो0 दीक्षित ने बताया कि वर्तमान समय में बायोलॉजिकल क्लॉक बदल रहा है। विश्व में भारतीय ही सबसे कम कोरोना से प्रभावित है। उन्होंने मा. इक्रोबायोलॉजी, बायोकेमेस्ट्री और बायोटेक्नोलॉजी के शोधार्थियों से आह्वान किया कि कोविड–19 के फैलाव को रोकने के लिए शोध करें, जिससे हम लोग इस विश्वव्यापी महामारी पर नियत्रंण पा सकें।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के प्रो0 आर0सी0 दूबे ने कहा कि अभी तक कोरोना की कोई वैक्सीन नहीं बनी है। हम सभी अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता और सामाजिक दूरी से ही बच सकते हैं। उन्होंने रोगों से बचाव के लिए वेदों और उपनिषदों का उदाहरण भी दिया। माइक्रोबायोलॉजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 एस0 के0 गर्ग ने कहा कि वर्तमान समय में इस वायरस में तेजी से म्युटेशन हो रहा है। इसलिए वायरस की लम्बे समय तक रहने की संभावना है। इस महामारी से निपटने के लिए वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं। लेकिन अभी तक इसके लिए वैक्सीन और मेडिसिन मार्केट में नहीं है। प्रतिकुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने कहा कि इस आपदा के कारण आज हम सभी तकनीकी पर निर्भर होते जा रहे है। अधिकतर कार्य वर्क फ्रॉम होम के तहत तकनीकी की सहायता से कर रहे हैं। आने वाला समय ऑनलाइन एजुकेशन का होगा।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बायोकमेस्ट्री विभाग के प्रो0 बेचन शर्मा ने बताया कि कोविड–19 पर नियंत्रण पाने के लिए लगातार शोध किये जा रहे हैं। जब तक इसका सटीक इलाज नहीं मिल जाता है, तब तक हम सभी को सोशल डिस्टेसिंग का पालन करना होगा।

एनबीआरआई के प्रधान वैज्ञानिक डॉ0 शुचि श्रीवास्तव ने बताया कि कोरोना काल में बेरोजगारी एवं किसानो की समस्या को दूर करने के लिए जैविक खाद के निर्माण पर बल देना होगा। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो0 सुधीर मेहरोत्रा ने बताया कि कोरोना वायरस से बचने के लिए लोगों को रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करना होगा। तकनीकी सत्र में विश्वविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के समन्वयक एवं बायोकमेस्ट्री विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 रामलखन सिंह ने कोविड–19 वायरस के लिए हाइड्राक्सी क्लोरोक्विन ड्रग्स के मैकेनिज्म के बारे में बताया। गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो0 राजर्षि कुमार ने वायरस की वैक्सीन के विकास और उसमें उत्पन्न होने वाली बाधाओं से अवगत कराया। अन्य वक्ताओं में एमिटी विश्वविद्यालय के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की डॉ0 प्राची श्रीवास्तव, शुएट्स, प्रयागराज, के बायोसाइंस विभाग के डॉ0 पी0के0 शुक्ला, एन0सी0सी0एस0, पुणे के डॉ0 प्रवीण राठी एवं बाबू बनारसी दास के जीव रसायन विभाग की डॉ0 लक्ष्मी बाला ने भी संबोधित किया।

वेबिनार के संयोजक एवं माइक्रोबायोलॉजी के विभागाध्यक्ष प्रो0 राजीव गौड़ ने बताया कि इस दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार में कई शिक्षाविद और वैज्ञानिकों ने अपने–अपने विचार रखे। आने वाले समय में वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविद्वों द्वारा शीघ्र ही कोविड–19 पर नियंत्रण पाने में हम सफल होंगे। प्रो0 गौड़ ने बताया कि इस वेबिनार में लगभग 500 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराई। वेबिनार का संचालन सूक्ष्म जीव विज्ञान के डॉ0 शैलेन्द्र कुमार एवं आई0ई0टी0 संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने किया। राष्ट्रीय वेबिनार की आयोजन सचिव एवं सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रो0 डॉ0 तुहिना वर्मा ने अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

जहां सुख, शांति है, वहीं रामराज्य हैः ज्ञानमती

30 मई। काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी और डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संयुक्त संयोजन में "राम राज्य में मानवीय मूल्यः वर्तमान वैश्विक परिदृश्य" विषय पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबीनार को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि अयोध्या भगवान राम की शाश्वत नगरी है तथा काशी भगवान शिव की नगरी है। दोनों विश्व की प्राचीनतम जीवित नगरी है। यह सुखद संयोग है कि दोनों विश्वविद्यालयों के संयुक्त संयोजन में राम राज्य के जीवन मूल्यों पर मंथन किया जा रहा है। प्रो0 दीक्षित ने कहा कि प्रभु श्रीराम भगवान शिव को अपना आराध्य मानते हैं और भगवान शिव प्रभु श्रीराम को अपना आराध्य मानते हैं। कुलपति ने कहा कि अवध विश्वविद्यालय अयोध्या में श्रीराम शोध पीठ तथा जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव शोधपीठ दोनों ही स्थापित हैं। इनके माध्यम से भारतीय संस्कृति की दोनों धाराओं के महापुरुषों की वाणी को हमें जन–जन तक पहुंचाना है। यह कार्य महामना की बगिया से ही हो सकता है।

वेबिनार की अध्यक्षता कर रही जैन धर्म की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख आयिका शिरोमणि भारत गौरव श्री 105 ज्ञानमती माताजी ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को भारतीय संस्कृति का आधार स्तंभ बताते हुए, उन्हें धर्म का सच्चा संरक्षक बताया। उन्होंने कहा कि जहां सुख, शांति है, वहीं रामराज्य है। पूज्य माताजी ने प्रभु श्रीराम को एक आदर्श व्यक्तित्व निरूपित किया। ज्ञानमती माता ने जैन ग्रंथ पद्म पुराण में वर्णित भगवान श्रीराम की विशेषताओं को उद्घाटित किया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में अंतर्राष्ट्रीय राम कथा वाचक एवं अयोध्या की रामायणन संस्थान की मंदाकिनी रामकिंकर ने अपने आशीर्वचन में प्रभु राम की स्तुति करते हुए कहा कि प्रभु श्रीराम का कोई भी पक्ष आप देख लें उसमें धर्म कूट–कूट कर भरा हुआ है। यही कारण है कि वह भारतीय संस्कृति के सिरमोर व्यक्तित्व हैं। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रभु श्रीराम के चरित्र का अनुसरण करने का आह्वान किया ताकि वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को आत्मसात किया जा सके।

वेबिनार में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 नीरज त्रिपाठी ने प्रभु राम के चरित्र को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा प्रदान की जिससे जीवन में समरसता तथा मानवीय मूल्यों को अपनाया जा सके। वेबिनार को सोफिया विश्वविद्यालय बुल्गारिया के प्रो0 आनंद वर्धन शर्मा, कुंदकुंद ज्ञानपीठ के निदेशक प्रो0 अनुपम जैन, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रो0 खुशहाली गुरु, प्रो संजय गुप्ता सहित पूज्य श्री 105 चंदना मति माताजी कथा पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी महाराज ने भी संबोधित किया।

वेबिनार का शुभारम्भ डॉ0 जीवन प्रकाश जैन एवं मनीष कुमार शास्त्री द्वारा किया गया। इस अवसर पर दोनों विश्वविद्यालयों के कुलगीत का प्रस्तुतिकरण किया गया। स्वागत भाषण मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उप समन्वयक प्रो0 गिरजा शंकर शास्त्री ने किया। वेबीनार का कुशल संचालन डॉ0 सुचिता सिंह ने किया। वेबिनार में अतिथियों के प्रति आभार डॉ0 उषा त्रिपाठी द्वारा किया गया। वेबीनार के आयोजन सचिव डॉ0 संजीव सराफ ने एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए रिपोर्ट प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का तकनीकी संयोजन डॉ0 अभिषेक त्रिपाठी, डॉ0 राम कुमार दांगी, डॉ0 मनीष कुमार सिंह एवं सौदामिनी श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ0 राजीव वर्मा, डॉ0 धर्मजंग की विशेष भूमिका रही। कार्यक्रम में श्रीलंका विश्वविद्यालय की डॉ0 रानी कुमारी, लंदन स्थित फ्रांसिस क्रिक कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट के डॉ0 जयंत अस्थाना फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के डॉ0 पीयूष की भी सहभागिता रही।

वेबिनार में देश–विदेश के विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थाओं एवं धार्मिक संस्थाओं से लगभग 400 प्रतिभागियों ने भाग लिया। हजारों की संख्या में प्रतिभागियों ने यूट्यूब एवं फेसबुक के माध्यम से इसका सजीव प्रसारण देखा।

"टाइम फॉर नेचर" विषय पर ऑनलाइन बहुआयामी प्रतियोगिता का आयोजन

05 जून। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर यू0एन0 की थीम "टाइम फॉर नेचर" विषय पर ऑनलाइन बहुआयामी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में छः अलग–अलग प्रारूपों में पेंटिंग, स्केचिंग, भाषण, कहानी–रचना, कविता–रचना एवं इको–फ्रेंडली मॉडल पर स्नातक एवं परास्नातक छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मनसा सोनी को प्राप्त हुआ। द्वितीय स्थान पर छात्रा महिमा पाण्डेय रहीं एवं तृतीय स्थान आकांक्षा सिंह को प्राप्त हुआ। स्केचिंग में प्रथम स्थान महिमा पाण्डेय, द्वितीय स्थान सलोनी त्रिपाठी एवं तृतीय स्थान देव कुमार यादव को मिला। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शिवेन्दु शेखर मिश्र, द्वितीय नित्या सिंह व तृतीय महिमा पाण्डेय एवं बद्री विशाल सोनी को संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ। कविता–रचना में प्रथम स्थान सलोनी त्रिपाठी एमएससी प्रथम वर्ष को, द्वितीय स्थान शिवेन्दु शेखर मिश्र एवं तृतीय स्थान बी.एस.सी. प्रथम वर्ष की शिवांगी शुक्ला को मिला। इको–फ्रेंडली मॉडल में शालिनी विश्वकर्मा को प्रथम, मनसा सोनी को द्वितीय स्थान एवं ललिता मिश्रा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

इस ऑनलाइन प्रतियोगिता का संचालन एवं पर्यवेक्षण विभागाध्यक्ष डॉ0 जसवंत सिंह ने किया। प्रो0 सिंह ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के दृष्टिगत परिसर के छात्र–छात्राओं के लिए 25 मई से 31 मई, 2020 के मध्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभाग की तरफ से छात्रों को डिजिटल ई–सहभागिता सर्टिफिकेट ई–मेल द्वारा प्रेषित कर दिया गया है। विभाग खुलने पर विजेताओं को पुरस्कृत किया जायेगा।